स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा)- द्वितीय खण्ड
(चतुर्थ पत्र- छायावादोत्तर हिन्दी काव्य)

- डॉ० मुन्ना साहू
हिन्दी विभाग

नया सप्तक - अज्ञेय

[जन्म - 1911, मृत्यु - 1987]

'अज्ञेय' का वास्तविक नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, है। अज्ञेय को प्रयोगवाद तथा नयी कविता का शलाका पुरुष कहा जाता है; किंतु वे अस्तित्ववाद में आस्था रखने वाले कवि हैं। 'अज्ञेय' ने सात-सात कवियों की रचनाओं का संकलन कर 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', एवं 'तीसरा सप्तक' का संपादन किया। इनके अन्तर्गत जिन कवियों की कविताएँ संकलित हैं - वे मुख्यत: निम्न हैं -
तार सप्तक (1943) - गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा, अज्ञेय। दूसरा सप्तक (1951) - भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेरबहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती। तीसरा सप्तक (1959) - प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

अज्ञेय के काव्य-संग्रह निम्नलिखित हैं - भग्नदूत, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, भरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, पूर्वा, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, सागर मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे आदि। अज्ञेय की बहुचर्चित कविताएँ हैं - असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, सौंप, नदी के द्वीप, हरी घास पर क्षण भर, जितना तुम्हारा सच, यह दीप अकेला आदि। इन कविताओं में 'असाध्य वीणा' एक लम्बी कविता है। इसका मूल भाव अहं का विसर्जन है। इसकी कुछ पंक्तियों से समझा जा सकता है -

"ज्ञेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था -
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब कुछ की तन्यता थी,,

Scanned with CamScanner